

शरणि सुखदाई (४)

साई शरणि सुखदाई आ सुखदाई मन भाई आ ।

शरणि गंगा खां पावन, आहे दासनि जी मन भावन
कढे मोह माया खां जाउ दिये सत्संग रहस्य सुहावन

वद भागी जंहि पाई आ ॥१॥

शरणि कल्प वृक्ष छाया जंहि टेई ताप मिटाया

जेके दीन बणी दर आया तिन प्रेम पदारथ पाया

तिन राम चरण लिव लाई आ ॥२॥

शरणि चिन्तामणि अभिरामा करे सब मन पूर्ण कामा

अवगुणीअ खे गुणी बनाए दिये प्रभु पद विश्रामा

श्री तिनि जी सफलु कमाई आ ॥३॥

शरणि आ सुखनि सरोवरु जिते राम कथा जलु सुन्दर

मिटे जीव जी प्यास सभाई लहे मालिकु गुणनि जो मंदर

मिली नाम जी निधी सुहाई आ ॥४॥

शरण दया जो दरिडो खोले नित दीन जननि खे गोले

जंहि सतिसंग प्यास प्यारी तहिंजो एबु बि कीन टटोले

इहा साई अ शरणि वदाई आ ॥५॥

जै साईं अमां प्राण प्यारा सभ रसिकन जीअ जिआरा
तवहां जे शील सनेह ते रीधा बाबा दशरथ राज दुलारा
तवहां जी गोदड़ी सदां वसाई आ ॥६॥